1

एक परिचय

(1 यूहन्ना)

यूहन्ना की पहली पत्री का पत्र, पाठकों को उस विश्वास और सच्चाई के प्रति आश्वस्त करने के लिए लिखा गया, जिसे उन्होंने स्वीकार किया था। वह आश्वासन देने के लिए लेखक ने कई विषयों पर वापस आना जारी रखा। उसका ढंग उस संगीतकार वाला है, जो पहले वाले सुरों पर सरगम बिठाने के लिए उन सुरों को ऊपर-नीचे करता रहता है, संगीत के रूपक को आगे बढ़ाते हुए हम 2 और 3 यूहन्ना की नन्हीं पत्रियों को इस बात में ''दोहराने की पुकार'' के रूप में देख सकते हैं कि वे 1 यूहन्ना में मिलने वाले विषयों पर ज़ोर देती हैं।

इस परिचय में हम ''ये पत्रियां क्या हैं ?''; ''इन्हें किसने लिखा ?''; ''वे कब और किसे लिखी गई थीं ?'' जैसे कुछ परिचायक प्रश्नों को देखेंगे।

लिखने की शैली

1 यूहन्ना को ''सामान्य पत्री'' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।[1] इस दृष्टिकोण से कि यह किसी विशेष कलीसिया या कलीसियाओं के समूहों के लिए लिखे जाने की कोई विशेष बात नहीं करती, इसे इस श्रेणी में रखा जाना सही है।[2]

परन्तु, 1 यूहन्ना में नये नियम में पाई जाने वाली बीस पत्रियों में से किसी भी पत्र से कम होने की विशेषता है, क्योंकि इसका न तो आरम्भ और न ही अन्त पत्र की तरह होता है।[3] पौलुस की सभी पत्रियों (रोमियों से फिलेमोन) में पत्री की तरह परिचय और सारांश है। इब्रानियों में पुस्तक के आरम्भ में लेखक और प्राप्तकर्ता का नाम नहीं है, पर इसका समापन एक पत्र की तरह होता है। अन्य सामान्य पत्रियों का आरम्भ इस संकेत के साथ होता है कि उन्हें किसने लिखा और किसे लिखा। 1 यूहन्ना का आरम्भ यह कहते हुए नहीं होता कि इसे किसने लिखा या किसे लिखा, न ही इसका समापन अभिवादन के साथ होता है।

तौ भी पुस्तक पत्र होने का दावा करती है। कुछ बातें जो पत्री में हैं, हम पढ़ते हैं, ''मैंने तुम्हें लिखा है'' या ''मैं तुम्हें लिख रहा हूं।''[4] नये नियम का एक परिचय कहता है:

> ... व्यक्तिगत हवाले अर्थात अपने पाठकों के साथ लेखक के सामान्य सम्बन्ध, और स्पष्ट ऐतिहासिक प्रतीक विचार (उदाहरण 2:19), यह स्पष्ट कर देते हैं कि यह लेख हर जगह रहने वाले सब मसीही लोगों के लिए संक्षिप्त पर्चा, केवल पुस्तिका या निबन्ध बनाने की मंशा से नहीं था: *यह एक मण्डली या, कई मण्डलियों के लिए पासबानी खत के रूप में पढ़ा जाने के लिए था।*[5]

कैननिसिटी[6]

यूहन्ना की पत्री को स्पष्टतया कुछ अन्य सामान्य पत्रियों से अधिक और आरम्भिक स्वीकृति मिली, चौथी शताब्दी में पहले यूसबियुस ने संकेत दिया कि इसे बिना विवाद के अपने समय के और ''प्राचीन समय के भी'' लोग मानते थे।[7]

लेखक

पुस्तक के अनाम होने के बावजूद 1 यूहन्ना को आमतौर पर यूहन्ना की पुस्तक माना जाता है, जिसे सुसमाचार के वृतांत दो अन्य पत्रियों और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का भी लेखक माना जाता है। यूहन्ना यीशु द्वारा चुने गए आरम्भिक प्रेरितों में से एक था। वह और उसका भाई याकूब जब्दी के पुत्र मछुआरे थे और उन्हें ''गर्जन के पुत्र'' भी कहा जाता था। वह उन तीन प्रेरितों (पतरस और याकूब के साथ) एक था, जो कई विशेष अवसरों पर यीशु के साथ रहे थे। वह उस ''चेले जिससे यीशु प्रेम रखता था'' के रूप में प्रसिद्ध हो गया (यूहन्ना 21:7, 20), और यीशु ने अपनी मृत्यु से थोड़ा पहले उसे अपनी माता मरियम की ज़िम्मेदारी सौंपी थी। शहीद होने के बजाय प्राकृतिक मृत्यु मरने वालों में एकमात्र प्रेरित यूहन्ना को माना जाता है। बाइबल से बाहर की परम्परा के अनुसार वह नब्बे से अधिक वर्ष जीवित रहा। उसके 1 यूहन्ना का लेखक होने को मानने का अच्छा कारण है।

1 यूहन्ना का लेखक यूहन्ना के होने का *बाहरी प्रमाण* विवश करने वाला है। यूसबियुस के अनुसार, पपियास ने इसे माना और 1 यूहन्ना का इस्तेमाल किया जबकि इरेनियुस, सिकंदरिया के कलेमंट और टर्टुलियन और म्युरेटारियन कैनन के लेखक सहित अन्य आरम्भिक लेखक इसे यूहन्ना प्रेरित की पत्री मानते थे।[8]

भीतरी प्रमाण सुझाव देता है कि यूहन्ना रचित सुसमाचार और 1 यूहन्ना का लेखक एक ही है। ''पत्रियों और शब्दावली, शैली और अवधारणाएं एक जैसी हैं और एक ही लेखक के होने का सुझाव देती हैं।''[9] जिस कारण वह प्रमाण जो यह साबित करता है कि सुसमाचार का चौथा वृतांत यूहन्ना प्रेरित द्वारा लिखा गया था, वह यह संकेत भी देता है कि 1 यूहन्ना उसी के द्वारा लिखा गया था।

यूहन्ना के लेखक होने का *बड़ा वैकल्पिक* यह शिक्षा है कि यूहन्ना को इन पुस्तकों का लेखक मानने का ज़िम्मेदार ''यूहन्नावादी समुदाय'' था। उदाहरण के लिए *न्यू ऑक्सफोर्ड एनोटेटेड बाइबल में* 1 यूहन्ना का परिचय इस प्रकार है, ''पराम्परागत रूप में चाहे पत्र कहा जाए, 1 यूहन्ना यूहन्ना की परम्परा में उस समाज के लोगों के लिए किसी अज्ञात शिक्षक का लेख या प्रवचन है।''[10] परन्तु ''अज्ञात शिक्षक'' के पक्ष में लेखक होने का परम्परागत विचार ठुकराने का अपर्याप्त प्रमाण है। पुस्तक की व्यक्तिगत प्रकृति, अपने पाठकों के साथ लेखक का सम्बन्ध, लेखक का दावा कि वह उन में से था, जो यीशु को व्यक्तिगत रूप से जानते थे (1 यूहन्ना 1:1-4) और पत्र के अधिकारात्मक सुर ''अज्ञात शिक्षक'' के विरोध में और लेखक के रूप में प्रेरित यूहन्ना के पक्ष में तर्क देते हैं।

लिखे जाने का स्थान व समय

यूहन्ना के तीनों पत्रों के लिखे जाने का स्थान सम्भवतया इफिसुस ही है, जहां स्पष्टतया यूहन्ना ने अपने अन्तिम साल बिताए हैं।[11]

आमतौर पर 1 यूहन्ना को यूहन्ना रचित सुसमाचार के बाद लिखी माना जाता है, यह निष्कर्ष निकालने का कि एक-दूसरे से पहले है, कोई अच्छा कारण नहीं है। अधिकतर अधिकारी इस बात से सहमत हैं कि 1 यूहन्ना लगभग 85-95 ईस्वी में लिखी गई थी।

प्राप्तकर्त्ता

पत्र विशेष रूप में यह नहीं बताता कि यह किन लोगों के नाम लिखा गया था। स्पष्टतया यह मसीही लोगों के नाम लिखा गया था। यह उतना ही स्पष्ट लगता है कि ये मसीही लोग वही थे जो झूठे शिक्षकों और शिक्षाओं से परेशान थे। ऐलन ब्लैक ने सुझाव दिया है कि यह किसी स्थानीय कलीसिया या कलीसियाओं के क्षेत्रीय समूह को (आमतौर पर इफिसुस के निकट माना जाता है) लिखा गया था, परन्तु सम्भवतया यह पूरे मसीही भाईचारे के लिए नहीं लिखा गया था।[12]

इसके अलावा यह कहा जा सकता है, चाहे वह हमारे लिए तो अनाम था पर इसके पाठक लेखक को जानते थे, जिनके साथ उनका निकट और घनिष्ठ सम्बन्ध था। इसके अलावा उसने अपने आपको उनके बड़े बुज़ुर्ग के रूप में देखा, जो उन्हें अपने प्रिय बच्चों के रूप में लिख रहा है। स्पष्टतया उसने उनसे उसका संदेश सुनने और मानने की उम्मीद की।

विषय

1 यूहन्ना में मुख्य विषय या मुख्य संदेश को समझ पाना कठिन है। रद्द करने वाला विषय होने के बजाय पुस्तक में कई अलग-अलग बातों पर ज़ोर दिया गया लगता है:

1. यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र के बारे में सही शिक्षा (या डॉक्ट्रिन)।
2. प्रेम।
3. जानना, आश्वस्त होना।
4. पाप न करना, पर धार्मिकता से जीना।
5. संगति।

जैसा कि पाठ के आरम्भ में संकेत दिया गया था, यूहन्ना ने संगीतकार की तरह सरगम में उन्हीं सुरों को बार-बार इस्तेमाल करने और उन्हें ऊपर नीचे करने की तरह इन विषयों को दोहराया।[13]

रूपरेखा

1 यूहन्ना के विषय को बार-बार आने के ढंग के कारण, पुस्तक की सामग्री की रूपरेखा बनाने का कोई भी प्रयास अगले वचनों में दिए गए विषयों में आ जाता है। नीचे दी गई सूची में, पुस्तक में बड़े विषयों की बारम्बारता को समझाने के लिए एक प्रयास किया गया है:[14]

1:1-4-परिचय: प्रेरितों की गवाही कि यीशु मसीह सचमुच में मनुष्य है दी गई।
विषय: यीशु मसीह पर असली डॉक्ट्रिन।

1:5-2:2-जिनका उद्धार हो गया है, उनका जीवन धार्मिकता वाला होना चाहिए और वे पाप करने से बचे। पर यदि वे पाप करते हैं तो उन्हें क्षमा किया जा सकता है।
विषय: धार्मिक जीवन।

2:3-6-धार्मिकता से जीने के लिए परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना शामिल है।
विषय: धार्मिकता से जीना।

2:7-11-धार्मिकता से जीने में एक-दूसरे से प्रेम रखना शामिल है।
विषय: प्रेम।

2:12-14-विराम: उनकी विशेषताएं जिनके नाम यूहन्ना ने लिखा, जोड़ी गई।

2:15-17-मसीही लोग संसार से प्रेम न रखें।
विषय: धार्मिकता से जीना।

2:18-29-मसीही लोग झूठे शिक्षकों और शिक्षाओं से कैसे निपटते हैं? ''उसने जो तुम्हें सिखाया था, बने रहें और धार्मिकता का जीवन बिताएं।''
विषय: यीशु मसीह पर असली डॉक्ट्रिन।

3:1-10-मसीही लोग पाप करने से बचें और धार्मिकता से जीवन बिताएं।
विषय: धार्मिकता से जीना।

3:11-18-धार्मिकता से जीने में एक दूसरे के लिए प्रेम रखना शामिल है।
विषय: प्रेम।

3:19-24-यदि हम एक-दूसरे से प्रेम रखें और परमेश्वर की आज्ञाओं को मानें तो हमें बड़ा आश्वासन मिल सकता है।
विषय: आश्वासन।

4:1-6-चेतावनी: झूठे शिक्षक यह सिखाएंगे कि मसीह देह में होकर नहीं आया है।
विषय: यीशु मसीह पर सही डॉक्ट्रिन।

4:7-21-एक-दूसरे से प्रम रखें।
विषय: प्रेम।

5:1-5-हमें आश्वासन यीशु मसीह में विश्वास रखने, भाइयों से प्रेम रखने और परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने से मिलता है।
विषय: आश्वासन।

5:6–12–इस तथ्य की गवाहियां बताई गईं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।
विषय: यीशु मसीह के बारे में सही डॉक्ट्रिन।

5:13–17–हम आश्वस्त हो सकते हैं कि हमें अनन्त जीवन मिला है और हमारी प्रार्थनाएं सुनी जाती हैं।
विषय: आश्वासन।

5:18–21–सारांश और समीक्षा: हम परमेश्वर को जान सकते हैं, कि हम परमेश्वर में हैं और यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है; पर हमें मूर्तिपूजा से बचना आवश्यक है।
विषय: आश्वासन।

ऐसी सूची बनाने में दिक्कत यह है कि विषय आपस में मिल जाते हैं। उदाहरण के लिए यीशु मसीह के बारे में सही शिक्षा से जुड़े भाग में सांत्वना देने वाले आश्वासन और धार्मिकता से जीने की ताड़नाएं हो सकती हैं।

और संगनाठमक स्कीमें हो सकती हैं। एक लेखक ने 1 यूहन्ना की यह रूपरेखा दी:

I. परिचय (1:1–4)।
II. ज्योति और अंधकार (1:5–2:2)।
III. मसीह को जानने की परीक्षा (2:3–11)।
IV. यह पत्र लिखने के कारण (2:12–14)।
V. चेतावनी: संसार से प्रेम न रखो (2:15–17)।
VI. अन्तिम समय में झूठ (2:18–27)।
VII. विश्वासयोग्य रहने की आशिषें (2:28–3:3)।
VIII. पाप और धार्मिकता की सच्चाई (3:4–9)।
IX. परमेश्वर की संतान को प्रेम के द्वारा दिखाया गया (3:10–23)।
X. सच्चाई की आत्मा और झूठ की आत्मा (3:24–4:6)।
XI. ताड़ना: ''एक दूसरे से प्रेम रखो'' (4:7–5:4)।
XII. परमेश्वर के पुत्र में विश्वास करने की निश्चितता (5:5–13)।
XIII. प्रार्थना में भरोसा (5:14–17)।
XIV. अन्तिम निश्चितताएं (5:18–21)।[15]

उद्देश्य

यूहन्ना ने अपने पत्र के कई उद्देश्यों की बात की। उसने लिखा ताकि उसके पाठक ''भी हमारे साथ सहभागी हों'' (1:1–3), की ''हमारा आनन्द पूरा हो जाए'' (1:4), कि पाठक ''पाप न करें'' (2:1) और की वे जान सकें कि ''अनन्त जीवन 'उनका है' '' (5:13)। दो पूर्वानुमानों के साथ यूहन्ना ने दो मूल कारण लिखे:[16]

(1) यूहन्ना ने लिखा ताकि उसके पाठकों को पक्का पता चल जाए कि यूहन्ना को क्या मालूम है, ताकि उनकी यूहन्ना और अन्य मसीही लोगों के साथ सहभागिता हो सके।

उनकी सहभागिता परमेश्वर और मसीह के साथ ही हो। *परिणाम,* यदि वे इस ज्ञान को मान लेते, तो यूहन्ना का आनन्द पूरा होना था।

(2) यूहन्ना ने इसलिए भी लिखा ताकि वे पाप न करें। यदि वे मसीह के व्यक्तित्व की सही समझ से रहते और पाप से दूर रहते, तो *परिणाम* यह आश्वासन होना था कि उन के पास अनन्त जीवन है।

मसीही लोगों के लिए यह मानना आवश्यक है कि यीशु ही मसीह है अर्थात परमेश्वर का पुत्र (सही ढंग से माने!) और उस विश्वास के अनुरूप जीवन बिताएं (धार्मिकता से जीएं!)।

संक्षेप में, 1 यूहन्ना का उद्देश्य पाठकों के विश्वास की पुष्टि करना था कि यीशु सममुच में मसीह अर्थात परमेश्वर का पुत्र है और उन्हें यह आश्वासन देना था कि एक-दूसरे के लिए प्रेम और उनके पाप को छोड़ने के आधार पर उन्हें अनन्त जीवन मिल सकता है।

ऐतिहासिक स्थिति

ऐसा पत्र किन ऐतिहासिक परिस्थितियों से आवश्यक हुआ नीचे यूहन्ना के सामने आई परिस्थिति की एक सम्भावित कल्पना है।[17]

कुछ झूठे शिक्षक ज्ञानवाद की एक आरम्भिक किस्म (मूल-ज्ञानवाद) को फैला रहे थे। अन्य बातों में ज्ञानवाद में आत्मा को अच्छे और तत्व (शरीर सहित कोई भी भौतिक बात) की तरह बुरा दिखाया जाता था।

यीशु के पूर्ण मनुष्य होने का इनकार किया गया। उनकी शिक्षा का एक भाग यह था कि यीशु एक ही समय में वास्तविक परमेश्वर और वास्तविक मनुष्य नहीं हो सकता। इसलिए वे उसके वास्तविक मनुष्य होने का इनकार करते थे। वे शरीर को बुरा मानते थे इस कारण उनका कहना था कि परमेश्वर देह नहीं बन सकता। शायद यह दावा करते हुए कि परमेश्वर का पुत्र वास्तव में मनुष्य नहीं था, बल्कि केवल ऐसा ''लगता'' था, वे निराकारवाद की एक किस्म की शिक्षा देते थे।[18]

शुद्ध जीवन की आवश्यक ता नहीं। स्पष्टतया वह यह भी दावा करते थे कि मसीही व्यक्ति के लिए शुद्धता, आज्ञाकारिता और प्रेम का जीवन जीने की आवश्यकता नहीं। इन ज्ञानवादियों में से कुछ एक निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि मनुष्य का आत्मिक जीवन भौतिक संसार में उसके व्यवहार से अप्रभावित रहता है।[19]

प्रेम अनावश्यक है। शायद उनकी शिक्षा यह थी कि किसी के जीने के ढंग से प्रेम के महत्व को कम करने के लिए परमेश्वर के साथ उसके सम्बन्ध में कोई फर्क नहीं पड़ता। शायद वे प्रेम रहित काम करते थे।[20] इस शिक्षा को मिलाने का यूहन्ना का जो भी करण रहा हो, एक-दूसरे से प्रेम करने पर उसका ज़ोर देना स्पष्ट है (देखें 1 यूहन्ना 2:9-11; 3:11-21; 4:7-21)।

''विशेष ज्ञान'' की आवश्यकता। वे यह दावा करते होंगे कि उनकी शिक्षा उस ''विशेष ज्ञान'' का भाग है, जो केवल उनके पास था। ''ज्ञानी'' केवल वही थे। (''ज्ञानवाद'' शब्द ''ज्ञान'' के लिए यूनानी शब्द से निकला है।) अपने आपको बड़ा दिखाने के उनके व्यवहार से मसीही लोग अपने आपको घटिया सोचने लगे होंगे, जिन्हें बाद में यूहन्ना ने लिखा।[21] झूठे

शिक्षकों के विचार-कि (क) केवल उनके पास ही ज्ञान है, (ख) यीशु वास्तव में परमेश्वर और मनुष्य दोनों नहीं है, (ग) किसी का जीवन जैसा भी हो उससे कोई फर्क नहीं पड़ता, (घ) भाईचारे की प्रीति से कुछ नहीं होता-से मसीही लोग बड़ी दुविधा में पड़ गए होंगे। क्या उन्हें पता चल सकता था कि सच क्या है? क्या यह पक्का पता चल पाना सम्भव था कि यीशु सचमुच में परमेश्वर और मनुष्य था या नहीं? क्या वे मूल ज्ञानवादियों के ''विशेष ज्ञान'' के बिना स्वर्ग में जा सकते थे?

एक अर्थ में यूहन्ना ने उन्हें लिखा कि ''हां, यह जानना यानी उन सच्चाइयों को पक्का जानना जो तुम ने सीखी हैं और यह आश्वस्त होना कि तुम स्वर्ग में जा सकते हो, सम्भव है।'' उसने जोर दिया कि मसीही लोग *जान* सकते हैं। ''जानते'' शब्द (जिसका अनुवाद *ginosko* और *oida* से किया गया है) 1 यूहन्ना में तीस से अधिक बार मिलता है। यदि पुस्तक के उन विषयों को एक शब्द में संक्षिप्त किया जाए तो वह शब्द ''आश्वासन'' होगा।[22] किसी भी अन्य आयत से उस आश्वासन को बेहतर ढंग से व्यक्त करने वाली एक आयत शायद 1 यूहन्ना 5:13 ही है: ''मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है; कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।''

टिप्पणियां

[1]पत्री पत्र को कहा जाता है। इन पत्रियों को ''सामान्य'' या ''विश्वव्यापी'' होने के अर्थ में ''कैथोलिक'' भी कहा जाता है। इस श्रेणी में आने वाली अन्य पत्रियां, याकूब, 1 और 2 पतरस और यहूदा हैं। [2]''सामान्य पत्री'' का विचार यह है कि यह किसी स्थानीय कलीसिया या व्यक्ति को सम्बोधित किए जाने के बजाय, सामान्य रूप में प्रभु की कलीसिया को लिखी गई थी। परन्तु यह विवरण इस श्रेणी में शामिल हर पत्री से पूरी तरह मेल नहीं खाता। शायद इस वर्गीकरण में आम तौर पर शामिल की जाने वाली पत्रियों का और सही विवरण केवल ''गैर पौलुसी'' होगा। यानी वे पत्र जिन्हें पौलुस द्वारा नहीं लिखा गया था। [3]''... इसका आरम्भ लेखक या उन लोगों की पहचान के किसी संकेत के साथ नहीं होता, जिन्हें सम्बोधित किया गया, न इसका समापन व्यक्तिगत अभिवादनों के साथ होता है'' (एफ़. एफ़. ब्रूस, *द एपिस्टल ऑफ़ जॉन: इंट्रोडक्शन एक्सपोजिशन एंड नोट्स* [पृष्ठ नहीं: पिकरिंग एंड इंग्लिस, 1970; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं, 1986), 25. [4]देखें यूहन्ना 1:4; 2:1, 7, 8, 12-14, 21, 26; 5:13. [5]डी. ए. कारसन, डग्लस जे मू और लियोन मौरिस, *एण्ड इंट्रोडक्शन टू द न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 1992), 445. [6]''कैननिसिटी'' में इस प्रश्न पर ध्यान दिया जाता है कि कोई पुस्तक ''कैनन'' की, यानी पुस्तकों की उस सूची में जिसे परमेश्वर की प्रेरणा से और अधिकारात्मक माना जाता है और इस कारण उन्हें बाइबल में शामिल किया गया है, है या नहीं। [7]एवरट एफ़. हैरिसन, *इंट्रोडक्शन टू द न्यू टैस्टामैंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं, 1964), 412. इसके विपरीत यूसबियुस ने संकेत दिया कि कुछ लोगों ने कैनन में अन्य सामान्य पत्रियों को शामिल किए जाने पर स्वाल उठाया था। (यूसबियुस *एक्लेसियेस्टिकल हिस्टरी* 3.24.) [8]ऐलन ब्लैक, *एन आउटलाई ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट इंट्रोडक्शन* (मैम्फ़िस, टैनिसी: हार्डिंग यूनिवर्सिटी ग्रैजुएट स्कूल ऑफ़ रिलिजिन, 1994), 45; यूसबियुस 3.39. [9]ब्लैक, 45. कारसन, द्वख्मू , और मौरिस, 447 में ''विषय, शब्दावली और वाक्य रचना में चौंकाने वाली समानताओं'' पर चर्चा की गई थी; ''विषयवस्तु और वाक्य रचना'' की इस समानता पर जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट *द एपिस्टल ऑफ़ जॉन द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं, 1960), 17-19 में भी लिखी गई है। [10]ब्रूस एम. मैज़गर और रोलैंड ई. मर्फी, सम्पा., ''इंट्रोडक्शन टू द फर्स्ट लैटर ऑफ़. जॉन,'' *द न्यू एक्सपोजिटड एनोटेटेड बाइबल विद द अपोक्रिफल: डियूट्रो कैननिकल बुक्स*'' (न्यू यार्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1991), 349.

[11]कारसन, मू, एण्ड मौरिस, 450. [12]ब्लैक, 46. [13]1 यूहन्ना पर एक टीकाकार ने पत्री की सामग्री के विवरण के लिए इसी रूपक का इस्तेमाल किया: ''1 यूहन्ना को पारस्परिक परिदृश्यों [पद्यों] की श्रृंखला के रूप में देखना सबसे बढ़िया है, जिसमें संगीत में आवृत्ति की तरह जिसमें कई विषय या अभिप्राय आते हैं, बूढ़ा संगीतकार वापस ले आता है। उदाहरण के लिए पूरी पत्री को ... चार बड़े विषयों के गिर्द संगठित किया जा सकता है-जिनकी ओर लेखक ज़ोर देने और स्पष्ट करने के लिए बार-बार लौटता है ...: क. विश्वास/डॉक्ट्रिन ... ख. पाप/आज्ञापालन। ... ग. आश्वासन ... घ. प्रेम ...'' (थॉमस एफ. जॉनसन, *1, 2 एंड 3 जॉन,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंटरी [पीबॉडी, मैसाचुएट्स : हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1993], 15)। [14]ऊपर दिए पांच विषयों में ''सहभागिता'' नहीं है, जो इसके बाद आती है, परन्तु पुस्तक में परमेश्वर के साथ सहभागिता होने का विचार रहता है; इसे पत्री के लगभग हर भाग में, विशेषकर अध्याय 1 में पाया जा सकता है। (''सहभागिता'' शब्द [*koinonia*] 1:3, 6, 7 में मिलता है।) [15]डेविड वाइट, ''द लैटर ऑफ़ जॉन: एंड इंट्रोडक्शन,'' डैंटन लैक्चरस (1987), 30 से लिया गया। [16]उदाहरण के लिए देखें यूहन्ना 23. [17]इस परिस्थिति के लिए एक दूसरा सम्भावित दृश्य यूहन्ना बता रहा था कि कलीसिया या कलीसियाओं में जिनके नाम वह लिख रहा था मतभेद था। (ब्रूस, 27; जॉन्सन, 5-15.) कुछ टीकाकार फूट का वर्णन करते हुए, जो कलीसिया(ओं) में पाई जाती थी, 1 यूहन्ना 2:19 को ''वे हम में से निकल गए'' वाक्यांश पर ज़ोर देते हैं। इस फूट के कारण उनका कहना है कि यह पत्री (1) संगति को छोड़कर जाने वालों को डांटने और उनके पीछे जाने वालों को चेतावनी देने और (2) रह जाने वालों को प्रोत्साहित करने और उन्हें इकट्ठा रहने का आग्रह करने यानी एक दूसरे से प्रेम करने के लिखी गई थी। यदि ऐसा था तो अब तक कही गई अधिकतर बातों में से प्रांसगिक होंगी। [18]देखें 2:22, 23; 3:15; 4:1-6; 5:1, 5-12, 20, 21. [19]यह हमें 1:5-10; 2:3-6, 15-17, 29; 3:3-10, 24; 5:17, 18 जैसे वचनों को समझने में सहायता करता है। [20]स्टॉट ने कहा कि ज्ञानवादियों यानी नोस्टिकों की एक विशेषता उनका ''प्रेम रहित होना'' था: ''जागृत लोगों की आत्मिक कुलीनता का दावा करते हुए कि केवल उन्हें ही 'गहराइयों' का पता था, वे आम मसीही लोगों को तुच्छ मानते थे'' (स्टॉर्ट, 48)।

[21]मसीही लोगों को ''घटिया होने का अहसास कराते हुए आत्मिक रूप में धमकी दी जा रही थी'' (कारसन, मू, एण्ड मौरिस, 452)। [22]स्टॉट ने लिखा, ''इन पत्रियों का प्रमुख विषय मसीही निश्चितता है'' (स्टॉट, 50)। एफ़. एफ़. ब्रूस ने इस पत्री को ''प्रोत्साहन और पुन: आश्वासन का संदेश'' कहा (ब्रूस, 25)। [23]1 यूहन्ना 2:3, 24ख; 3:14क, 18, 19, 24ख; 5:2 में पुन: आश्वासन देने वाले वचनों को भी देखें।